ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE:2 0. 02 .2021

पाठ नाम - प्रगतिवादी साहित्य

प्रगतिवादी साहित्य की विशेषता

समाज और समाज से जुड़ी समस्याओं यथा गरीबी ,अकाल,स्वाधीनता,किसान-मजदूर,शोषक-शोषित संबंध और इनसे उत्पन्न विसंगतियों पर जितनी व्यापक संवेदनशीलता इस धारा की कविता में है ,वह अन्यत्र नहीं मिलती। यह काव्यधारा अपना संबंध एक ओर जहां भारतीय परंपरा से जोड़ती है वहीं दूसरी ओर भावी समाज से भी। वर्तमान के प्रति वह आलोचनात्मक यथार्थवादी दृष्टि अपनाती है। प्रगतिवादी काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियां इस प्रकार हैं:-

1. **सामाजिक यथार्थवाद** : इस काव्यधारा के कवियों ने समाज और उसकी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। समाज में व्याप्त सामाजिक ,आर्थिक,धार्मिक,राजनीतिक विषमता के कारण दीन-दरिद्र वर्ग के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि के प्रसारण को इस काव्यधारा के कवियों ने प्रमुख स्थान दिया और मजदूर ,कच्चे घर,मटमैले बच्चों को अपने काव्य का विषय चुना।

सड़े घूर की गोबर की बदबू से दबकर

महक जिंदगी के गुलाब की मर जाती है

...केदारनाथ अग्रवाल

ओ मजदूर! ओ मजदूर!!

तू सब चीजों का कर्त्ता,तू हीं सब चीजों से दूर

ओ मजदूर! ओ मजदूर!!

*****

श्वानों को मिलता वस्त्र दूध,भूखे बालक अकुलाते हैं।

मां की हड्डी से चिपक ठिठुर,जाड़ों की रात बिताते हैं

*****

युवती की लज्जा बसन बेच,जब ब्याज चुकाये जाते हैं

मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते है

पापी महलों का अहंकार देता मुझको तब आमंत्रण ---दिनकर

2. **मानवतावाद का प्रकाशन** : वह मानवता की अपरिमित शक्ति में विश्वास प्रकट करता है और ईश्वर के प्रति अनास्था प्रकट करता है ;धर्म उसके लिए अफीम का नशा है -

जिसे तुम कहते हो भगवान-

जो बरसाता है जीवन में

रोग,शोक,दु:ख दैन्य अपार

उसे सुनाने चले पुकार

3.क्रांति का आह्वाहन: प्रगतिवादी कवि समाज में क्रांति की ऐसी आग भड़काना चाहता है,जिसमें मानवता के विकास में बाधक समस्त रूढ़ियां जलकर भस्म हो जाएं-

देखो मुट्ठी भर दानों को,तड़प रही कृषकों की काया।

कब से सुप्त पड़े खेतों से,देखो 'इन्कलाब' घिर आया॥

*****

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ

जिससे उथल पुथल मच जाए

4. शोषकों के प्रति आक्रोश: प्रगतिवाद दलित एवं शोषित समाज के 'खटमलों'-पूंजीवादी सेठों,साहूकारों और राजा-महाराजाओं-के शोषण के चित्र उपस्थित कर उनकी मानवता का पर्दाफाश करता है-

ओ मदहोश बुरा फल हो,शूरों के शोणित पीने का।

देना होगा तुझे एक दिन,गिन-गिन मोल पसीने का॥

5.शोषितों को प्रेरणा : प्रगतिवादी कवि शोषित समाज को स्वावलम्बी बनाकर अपना उद्धार करने की प्रेरणा देता है-

न हाथ एक अस्त्र हो, न साथ एक शस्त्र हो।

न अन्न नीर वस्त्र हो, हटो नहीं, डटो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

वह शोषित में शक्ति देखता है और उसे क्रांति में पूरा विश्वास है। इस प्रकार प्रगतिवादी कवि को शोषित की संगठित शक्ति और अच्छे भविष्य पर आस्था है-

मैंने उसको जब-जब देखा- लोहा देखा

लोहा जैसा तपते देखा,गलते देखा,ढ़लते देखा

मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा

...केदारनाथ अग्रवाल

6. रूढ़ियों का विरोध- इस धारा के कवि बुद्धिवाद का हथौड़ा लेकर सामाजिक कुरीतियों पर तीखे प्रहार कर उनको चकनाचूर कर देना चाहते हैं-

गा कोकिल!बरसा पावक कण

नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन ...पंत

7. तत्कालीन समस्याओं का चित्रण : प्रगति का उपासक कवि अपने समय की समस्याओं जैसे-बंगाल का अकाल आदि की ओर आंखें खोलकर देखता है और उनका यथार्थ रूप उपस्थित कर समाज को जागृत करना चाहता है-

बाप बेटा बेचता है

भूख से बेहाल होकर,

धर्म धीरज प्राण खोकर

हो रही अनरीति,राष्ट्र सारा देखता है

एक भिक्षुक की यथार्थ स्थिति -

वह आता

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ...निराला

8.मार्क्सवाद का समर्थन: इस धारा के कुछ कवियों ने मात्र साम्यवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स का तथा उसके सिद्धांतों का समर्थन करने हेतु प्रचारात्मक काव्य ही लिखा है-

साम्यवाद के साथ स्वर्ण-युग करता मधुर पदार्पण

और साथ ही साम्यवादी देशों का गुणगान भी किया है-

लाल रूस का दुश्मन साथी! दुश्मन सब इंसानों का

9.नया सौंदर्य बोध: प्रगतिवादी कवि श्रम में सौंदर्य देखते हैं। उनका सौंदर्य-बोध सामाजिक मूल्यों और नैतिकता से रहित नहीं है। वे अलंकृत या असहज में नहीं, सहज सामान्य जीवन और स्थितियों में सौंदर्य देखते हैं। खेत में काम करती हुई किसान नारी का यह चित्र इसी तरह का है-

बीच-बीच में सहसा उठकर खड़ी हुई वह युवती सुंदर

लगा रही थी पानी झुककर सीधी करे कमर वह पल भर

इधर-उधर वह पेड़ हटाती,रुकती जल की धार बहाती

10. व्यंग्य : सामाजिक,आर्थिक वैषम्य का चित्रण करने से रचना में व्यंग्य आ जाना स्वाभाविक है। व्यंग्य ऊपर-ऊपर हास्य लगता है किंतु वह अंततः करुणा उत्पन्न करता है। इसीलिए सामाजिक व्यंग्य अमानवीय-शोषण सत्ता का सदैव विरोध करता है। प्रगतिशील कवियों में व्यंग्य तो सबके यहां मिल जाएगा किंतु नागार्जुन इस क्षेत्र में सबसे आगे हैं। एक देहाती मास्टर दुखरन , उसके शिष्यों और मदरसे की यह तस्वीर नागार्जुन ने इस प्रकार खींची है-

घुन खाए शहतीरों पर की बारह खड़ी विधाता बांचे

फटी भीत है,छत है चूती,आले पर बिस्तुइया नाचे

लगा-लगा बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट में पांच तमाचे

इसी तरह से दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम से सांचे।

11. प्रकृति : मानव समाज की भांति प्रकृति के क्षेत्र में भी प्रगतिवादी कवि सहज स्थितियों में सौंदर्य देखता है। उसका सौंदर्य बोध चयनवादी नहीं। प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति और ग्राम जीवन के अनुपम चित्र खींचे हैं जिनमें रूप-रस-गंध-वर्ण के बिम्ब उभरे हैं।नागार्जुन का 'बादल को घिरते देखा है ',केदारनाथ अग्रवाल का 'बसंती हवा' और त्रिलोचन का 'धूप में जग-रूप सुंदर' उत्कृष्ट कविताएं हैं।

12.प्रेम - प्रगतिवादी कवियों ने प्रेम को सामाजिक-पारिवारिक रूप में देखा है। वर्ग-विभक्त समाज में प्रेम सहज नहीं हो पाता। प्रेम वर्ग-भेद ,
,वर्ण-भेद को मिटाता है। प्रगतिवादी कवि प्रेम की पीड़ा का एकांतिक चित्र करते

हैं। किंतु वह वास्तविक जीवन संदर्भों में होता है।अत: उनका एकांत भी समाजोन्मुख होता है; जैसे त्रिलोचन का यह अकेलापन-

आज मैं अकेला हूं,अकेले रहा नहीं जाता

जीवन मिला है यह,रतन मिला है यह

फूल में मिला है या धूल में मिला है यह

मोल-तोल इसका अकेले कहा नहीं जाता

आज मैं अकेला हूं

13. नारी-चित्रण : प्रगतिवादी कवि के लिए मजदूर तथा किसान के समान नारी भी शोषित है ,जो युग-युग से सामंतवाद की कारा में पुरुष की दासता की लौहमयी जंजीरों से जकड़ी है। स्वतंत्र व्यक्तितत्व खो चुकी है और केवल मात्र रह गई है पुरुष की वासना तृप्ति का उपकरण। इसलिए वह उसकी मुक्ति चाहता है-अपना स्वतंत्र व्यक्तितत्व खो चुकी है और केवल मात्र रह गई है पुरुष की वासना तृप्ति का उपकरण। इसलिए वह उसकी मुक्ति चाहता है-

योनि नहीं है रे नारी! वह भी मानवी प्रतिष्ठित

14.साधारण कला पक्ष : प्रगतिवाद जनवादी है। अत: वह जन-भाषा का प्रयोग करता है। उसे ध्येय को व्यक्त करने की चिंता है। काव्य को अलंकृत करने की चिंता नहीं। अत: वह कहता है-

तुम वहन कर सको जन-जन में मेरते विचार।

वाणी!मेरी चाहिए क्या तुम्हें अलंकार॥

छंदों में भी अपने स्वछंद दृष्टिकोण के अनुसार उन्होंने मुक्तक छंद का ही प्रयोग किया है-

खुल गए छंद के बंध,प्रास के रजत पाश ....पंत

प्रगतिवादी कविता में नए उपमानों को लिया गया है और वे सामान्य जन जीवन और लोक-गीतों से ग्रहण किए गए हैं-

कोयल की खान की मजदूरिनी सी रात।

बोझ ढ़ोती तिमिर का विश्रांत सी अवदात॥

मशाल,जोंक,रक्त,तांडव,विप्लव,प्रलय आदि , आदि नए प्रतीक प्रगतिवादी साहित्य की अपनी सृष्टि हैं। प्रगतिवादी कवि का कला संबंधी दृष्टिकोण भाषा ,छंद,अलंकार,प्रतीकों तथा वर्णित भावों से स्पष्ट हो जाता है। वह कला को स्वांत: सुखाय या कला कला के लिए नहीं , बल्कि जीवन के लिए ,बहुजन के लिए अपनाता है। वह कविता को जन-जीवन का प्रतिनिधि मानता है।

प्रमुख कवि - नागार्जुन

जन कवि नागार्जुन का जन्म **30 जून,1911 को सतलखा गांव, मधुबनी जिला बिहार** में हुआ था। उनके पिता का नाम **गोकुल मिश्र** था तथा उनकी माता का नाम **उमा देवी** था। जनकवि नागार्जुन का बचपन का नाम **'ठक्कन मिसर'** था। काफी दिनों के बाद इस ठक्कन का नामकरण हुआ और बाबा वैद्यनाथ की कृपा प्रसाद मानकर उनका नाम **वैद्यनाथ मिश्र** रख दिया गया। जन कवि नागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था । उन्हे **नागार्जुन** और **यात्री** के नाम से भी जाना जाता था।

लेखन कार्य एवं प्रकाशन

नागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था, लेकिन हिंदी साहित्य में उन्होंने नागार्जुन तथा मैथिली में यात्री उपनाम से रचनाएं लिखी। काशी में रहते हुए उन्होंने वैद्य उपनाम से भी कविताएं लिखी। 1936 में सिंहल में 'विद्यालंकार परिवेण' में ही 'नागार्जुन' नाम ग्रहण किया। शुरुआत में उनकी हिन्दी कविताएँ भी 'यात्री' के नाम से ही छपी थीं। अपने कुछ साथियों के आग्रह पर 1941 के बाद उन्होंने हिन्दी में नागार्जुन के अतिरिक्त किसी नाम से न लिखने का निर्णय लिया था।

नागार्जुन की पहली प्रकाशित रचना एक **मैथिली** कविता थी जो कि 1929 में लहेरियासराय दरभंगा से प्रकाशित **'मैथिली'** नामक पत्रिका में छपी। उनकी पहली हिंदी रचना **'राम के प्रति'** नामक कविता थी जो कि 1934 मे लाहौर से निकलने वाले सप्ताहिक **'विश्वबंधु'** में छपी थी ।

प्रसिद्ध रचनाएं

कविता-संग्रह-

- युगधारा
- सतरंगे पंखों वाली
- प्यासी पथराई आँखें
- तालाब की मछलियाँ
- तुमने कहा था
- खिचड़ी विप्लव देखा हमने
- हजार-हजार बाँहों वाली
- पुरानी जूतियों का कोरस

- रत्नगर्भ
- ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!!
- आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने
- इस गुब्बारे की छाया में
- भूल जाओ पुराने सपने
- अपने खेत में

प्रबंध काव्य-

- भस्मांकुर
- भूमिजा

उपन्यास-

- रतिनाथ की चाची
- बलचनमा
- नयी पौध
- बाबा बटेसरनाथ
- वरुण के बेटे
- दुखमोचन
- कुंभीपाक -1960 (1972 में 'चम्पा' नाम से भी प्रकाशित)
- हीरक जयन्ती -1962(1979 में 'अभिनन्दन' नाम से भी प्रकाशित)
- उग्रतारा
- जमनिया का बाबा – 1968 (उसी वर्ष 'इमरतिया' नाम से भी प्रकाशित)
- गरीबदास -1990 (1979 में लिखित)

संस्मरण-

- एक व्यक्ति: एक युग

कहानी संग्रह-

- आसमान में चन्दा तैरे

आलेख संग्रह-

- अन्नहीनम् क्रियाहीनम्
- बम्भोलेनाथ

बाल साहित्य-

- कथा मंजरी भाग-1
- कथा मंजरी भाग-2
- मर्यादा पुरुषोत्तम राम -1955 के बाद में 'भगवान राम' के नाम से और अब 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के नाम से प्रकाशित हुई है।
- विद्यापति की कहानियाँ

मैथिली रचनाएँ-

- चित्रा (कविता-संग्रह)
- पत्रहीन नग्न गाछ
- पका है यह कटहल (") -1995 ('चित्रा' तथा 'पत्रहीन नग्न गाछ' की सभी कविताओं के साथ 52 असंकलित मैथिली कविताएँ हिंदी पद्यानुवाद सहित)
- पारो (उपन्यास)

- नवतुरिया

मृत्यु

जनकवि नागार्जुन की मृत्यु **5 नवंबर,1998** को हुई थी

रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। 'दिनकर' स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गये। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। एक ओर उनकी कविताओ में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मिलता है।

कृतियाँ

उन्होंने सामाजिक और आर्थिक समानता और शोषण के खिलाफ कविताओं की रचना की। एक प्रगतिवादी और मानववादी कवि के रूप में उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं को ओजस्वी और प्रखर शब्दों का तानाबाना दिया। उनकी महान रचनाओं में रश्मिरथी और परशुराम की प्रतीक्षा शामिल है। उर्वशी को छोड़कर दिनकर की अधिकतर रचनाएँ वीर रस से ओतप्रोत है। भूषण के बाद उन्हें वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

ज्ञानपीठ से सम्मानित उनकी रचना उर्वशी की कहानी मानवीय प्रेम, वासना और सम्बन्धों के इर्द-गिर्द घूमती है। उर्वशी स्वर्ग परित्यक्ता एक अप्सरा की कहानी है। वहीं, कुरुक्षेत्र, महाभारत के शान्ति-पर्व का कवितारूप है। यह दूसरे विश्वयुद्ध के बाद लिखी गयी रचना है। वहीं सामधेनी की रचना कवि के सामाजिक चिन्तन के अनुरुप हुई है। संस्कृति के चार अध्याय में दिनकरजी ने कहा कि सांस्कृतिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद भारत एक देश है। क्योंकि सारी विविधताओं के बाद भी, हमारी सोच एक जैसी है।

काव्य कृतियाँ

बारदोली-विजय संदेश (1928), प्रणभंग (1929), रेणुका (1935), हुंकार (1938), रसवन्ती (1939), द्वंद्वगीत (1940), कुरूक्षेत्र (1946), धूप-छाँह (1947), सामधेनी (1947), बापू (1947), इतिहास के आँसू (1951), धूप और धुआँ (1951), मिर्च का मजा (1951), रश्मिरथी (1952), दिल्ली (1954), नीम के पत्ते (1954), नील कुसुम (1955), सूरज का ब्याह (1955), चक्रवाल (1956), कवि-श्री (1957), सीपी और शंख (1957), नये सुभाषित (1957), लोकप्रिय कवि दिनकर (1960), उर्वशी (1961), परशुराम की प्रतीक्षा (1963), आत्मा की आँखें

(1964), कोयला और कवित्व (1964), मृत्ति-तिलक (1964), दिनकर की सूक्तियाँ (1964), हारे को हरिनाम (1970), संचियता (1973), दिनकर के गीत (1973), रश्मिलोक (1974), उर्वशी तथा अन्य शृंगारिक कविताएँ (1974)।

गद्य कृतियाँ

मिट्टी की ओर 1946, चित्तौड़ का साका 1948, अर्धनारीश्वर 1952, रेती के फूल 1954, हमारी सांस्कृतिक एकता 1955, भारत की सांस्कृतिक कहानी 1955, संस्कृति के चार अध्याय 1956, उजली आग 1956, देश-विदेश 1957, राष्ट्र-भाषा और राष्ट्रीय एकता 1955, काव्य की भूमिका 1958, पन्त-प्रसाद और मैथिलीशरण 1958, वेणुवन 1958, धर्म, नैतिकता और विज्ञान 1969, वट-पीपल 1961, लोकदेव नेहरू 1965, शुद्ध कविता की खोज 1966, साहित्य-मुखी 1968, राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी 1968, हे राम! 1968, संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ 1970, भारतीय एकता 1971, मेरी यात्राएँ 1971, दिनकर की डायरी 1973, चेतना की शिला 1973, विवाह की मुसीबतें 1973, आधुनिक बोध 1973।

NAME-PRITI TIWARI